श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

प्रथम वर्ष - अभ्यास - १

जून-.२०२१

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा । ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. मिथ्यात्व आदि कारणों से नये कर्मो का ..... के साथ मिल जाना बंध तत्व है ।
२. महानुभाव आपका ..... शीघ्र ही होगा ।
३. अनंत चारित्र गुण की प्राप्ति ..... कर्म के क्षय होने से प्राप्त होती है ।
४. नमस्कार यह ..... और आदर की भावना व्यक्त करने का उच्च साधन है ।
५. स्वाति शालीभद्र वगैरह ..... के जीव है ।
६. अरिहंत परमात्मा के उपदेश का सार ..... है ।
७. समवसरण में भगवान ..... बैठते है ।
८. जीवों के प्रति दया करुणा की भावना ने अइमत्ता बाल मुनि को ..... की भेंट प्रदान की ।
९. जीवत्व यह ..... की खान है ।
१०. विश्व विविध प्रकार की वस्तु और ..... का भंडार है ।
११. स्वइच्छा से एक स्थान से दूसरे स्थान पर न जा सके वे ..... जीव हैं ।
१२. प्रभु के जीव ने..... वीसस्थानक तप की आराधना कर तीर्थंकर नाम कर्म उपार्जन किया ।
१३. अरिहंत पद और सिद्ध पद के साथ शाश्वत सुख देने वाला श्री ..... महान है ।
१४. स्वाश्रयी अतिशय याने स्वयं के संघ में ..... का नाश करने वाला ।
१५. कैसा ..... है, ये मानव भव ।
१६. प्रत्येक रचना में रचनाकार प्रथम गाथा में ..... को वंदन करके मांगलिक करते हैं ।
१७. संवर ..... और मोक्ष जीव के परिणाम स्वरुप हैं ।
१८. प्रभु का वर्ण तप्त सुवर्ण जैसा पीत और ..... था ।
१९. भगवान लोकालोक के सम्पूर्ण स्वरुप को सभी प्रकार से ..... से जानते हैं ।
२०. जीवतत्व से विपरीत ..... जड स्वभाववाला अजीव तत्व है ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. प्रभु ने विनीता का मुख्य राज्य किसे दिया ?
२. झाड, शंख, सिंह, वानर वगैरह किस गति के जीव है ?
३. पाँचो स्थावर क्या कहलाते हैं ?
४. तीन भुवन में दीपक समान कौन है ?
५. युग याने क्या ?
६. रत्नपुर नगरी के राजा का नाम बताओ ?
७. शरद पूनम को चंद्र के दर्शन किसे नहीं हुए ?
८. गोत्र कर्म के क्षय होने से कौन से गुण की प्राप्ती होती है ?
९. परम उच्च स्थान पर जो रहें वो क्या कहलाते हैं ?
१०. अनावृष्टि याने क्या ?
११. ऋषभदेव प्रभु ने प्रथम भव में किस आचार्य के पास से प्रतिबोध पाकर सम्यक्त्व पाया ?
१२. पंच परमेष्ठि में सिद्ध का वर्ण कौनसा ?
१३. प्रभु की दीक्षा शिबिका का नाम क्या था ?
१४. किसकी अपेक्षा से सर्व जीवों का एक ही प्रकार में समावेश होता है ?
१५. विमलवाहन कुलकर ने कौनसी दंडनिती प्रवर्तित की ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१. तिविहा २) बासिय ३) प्पणासणओ ४) च ५) मुत्ता ६) तस ७) पइवं ८) रयण ९) अेसो
१०. प्रातिहार्य ११) नायव्वा १२) मुक्खो १३) उमेणेसिं १४) वणस्सइ १५) भेया १६) इच्चाई १७) वेय
१८. साहूणं १९) करग २०) सरुवं

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) जुहाडा	१) अपकाय	६) मोर	६) कृतज्ञता का संकेत
२) मथुरा	२) राशि	७) गति	७) भामंडल
३) सूर्यकी किरण जैसा	३) समीला	८) धान्य	८) उद्यान
४) सिद्धार्थ	४) प्रदक्षिणा	९) हरताल	९) नरक
५) घनोदधि	५) पृथ्वीकाय	१०) नमस्कार	१०) जीतशत्रु

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. पाँच शिल्प के पेटा भेद कितने ?
२. उपाध्याय के गुण कितने ?
३. नव तत्व के कुल भेद कितने ?
४. वेद की अपेक्षा से जीव के प्रकार कितने ?
५. मानवभव कितने दृष्टांत से दुर्लभ है ?
६. तीर्थकर की वाणी कितने गुणो वाली है ?
७. चक्रवर्ती कितने खंड के अधिपति होते हैं ?
८. लवण समुद्र की चौडाई कितने योजन है ?
९. प्रभु के साथ कितने पुरुषों ने दीक्षा लीं ?
१०. देवकृतातिशय कितने हैं ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. किसी युगल को मातापिता अशोकवृक्ष के नीचे रखकर किसी काम के लिये गये थे ।
२. तेउकाय विविध प्रकार की हवाओं का इसमें समावेश होता है ।
३. उपादेय याने ग्रहण करने योग्य हैं ।
४. जीवत्व यह समल, अशुद्ध सुवर्ण है ।
५. पूर्ण नवकार पाँचसो पचास सागरोपम के पापों का नाश करता है ।
६. चेतना सहित हो तथा प्राण धारण करें वो जीव तत्व है ।
७. श्री तीर्थंकर प्रभु की वाणी देव, मनुष्य और तिर्यंच सभी अपनी अपनी भाषा में समझते है ।
८. पाप यह शुभ कर्म का आश्रव है, पुण्य यह अशुभ कर्म का आश्रव है ।
९. उत्कृष्ट ऐसे विरती धर्म की प्राप्ति मानव के लिये सुलभ है ।
१०. सुंदरी को दांये हाथ से किया जाने वाला गणित सिखाया ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. दुनिया में ऐसी एक भी वस्तु नहीं जिसके द्वारा जीव का जीवत्व तौल सकें ।
२. समवसरण न हो तब भी अरिहंत प्रभु के साथ मे आठ प्रातिहार्य होते ही हैं ।
३. आज तुझे घी से लथपथ पूरी की पूरी रोटी मिलेगी ।
४. राजा की बात सुनकर राजकुमार सुन्न हो गये ।
५. व्रत नियम, संयम वगैरह के द्वारा आने वाले कर्म रुकें वो संवर तत्व है ।
६. पाप अगर लोहे की बेडी है, तो पुण्य सोने की बेडी है ।
७. नाभिकुलकर के प्रसंग से यहाँ कुलकरों के उत्पति विषयक जानकारी देते है ।
८. एक भी राजकुमार को राधावेध में सफलता नहीं मिली ।
९. सौ सुनर की एक लहार की ।
१०. इन जीवों के प्रति दया करुणा की भावना जागती है ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. सिद्ध पासा का दृष्टांत
२) श्री नवकार मंत्र महान
३) जीव-वीचार का ज्ञान होना अति आवश्यक
४. हेय,ज्ञेय, उपादेय समझाओ
५) ऋषभ देव प्रभु की वंश स्थापना